त्रिपुरसुन्दरि अष्टकम्

कदम्ब वन चारिणीं मुनि कदम्ब कादम्बिनीं
नितम्ब जित भूधरां सुर नितम्बिनी सेविताम् ।
नवाम्बुरुह लोचनां अभिन वाम्बुद श्यामलां
त्रिलोचन कुटुम्बिनीं त्रिपुर सुन्दरी माश्रये ॥ १॥

कदम्ब वन वासिनीं कनक वल्लकी धारिणीं
महार्ह मणि हारिणीं मुख समुल्लसद्वारुणीम् ।
दया विभव कारिणीं विशद लोचनीं चारिणीं
त्रिलोचन कुटुम्बिनीं त्रिपुर सुन्दरी माश्रये ॥ २॥

कदम्बवन शालया कुचमरो ल्लसन्मालया
कुचोपमित शैलया गुरुकृपा लसद्वेलया ।
मदारुण कपोलया मधुर गीत वाचालया
कयाऽपि घननीलया कवचिता वयं लीलया ॥ ३॥

कदम्ब वन मध्यगां कनक मण्डलो पस्थितां
षडम्बुरुह वासिनीं सतत सिद्ध सौदामिनीम् ।
विडम्बित जपारुचिं विकच चन्द्र चूडामणिं
त्रिलोचन कुटुम्बिनीं त्रिपुर सुन्दरी माश्रये ॥ ४॥

कुचाञ्चित विपञ्चिकां कुटिल कुन्तलालं कृतां
कुशेशय निवासिनीं कुटिल चित्त विद्वेषिणीम् ।
मदारुण विलोचनां मनसिजारि संमोहिनीं

मतङ्गमुनि कन्यकां मधुर भाषिणी माश्रये ॥ ५॥

स्मरेप्रथम पुष्पिणीं रुधिर बिन्दु नीलाम्बरां
गृहीत मधु पात्रिकां मधुविकुर्न र्नेत्राञ्चलाम् ।
घनस्तन भरोन्नतां गलित चूलिकां श्यामलां
त्रिलोचन कुटुम्बिनीं त्रिपुर सुन्दरी माश्रये ॥ ६॥

सकुङ्कुम विलेपनां अलिकचुम्बि कस्तूरिकां
समन्द हसितेक्षणां सशर चाप पाशाङ्कुशाम् ।
अशेष जनमोहिनीं अरुणमाल्य भूषाम्बरां
जपाकुसुम भासुरां जपविधौ स्मराम्यम्बिकां ॥ ७॥

पुरन्दर पुरंध्रिकां चिकुर बन्ध सैरंध्रिकां
पितामह पतिव्रतां पटुपटीर चर्चारताम् ।
मुकुन्द रमणी मणीं लसदलङ्क्रिया कारिणीं
भजामि भुवनांबिकां सुरवधूटिका चेटिकाम् ॥ ८॥

॥ इति त्रिपुरसुन्दरि अष्टकम् सम्पूर्णम् ॥